सं श्रो.वि./एफ. डी./152-83/55964. —चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज ऊषा स्थिनिंग एण्ड विविग मल्जिलिं , 12/1, माईल स्टोन, मयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री गिरीराज किशोर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

मौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसिल्ए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रधान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं 5415-3-अम-68/ 15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, श्रीधसूचना सं 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित अम न्यायालय, फरीदावाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विधाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:-

क्या श्री गिरीराज किशोर की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी/92-83/55971.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि कार्यकारी श्रभियन्ता हरियाणा राज्य लघु सिचाई द्वियविल कारपोरेशन, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विकय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, श्रीद्यौगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415−3-श्रम−68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीटाबाद को विवादग्रस्त या उन्नुसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिए निविष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बिकम सिंह की सेवाओं का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

'दिनांक 26 ग्रक्तूबर, 1983

सं. श्रो.वि /एफ.डी./250-83/57164. — चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज ज्वाय वी इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं. 62, सैक्टर 24, फरीदावाद के श्रमिक श्री ब्रह्मा नन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के ग्रिधीन भ्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त यो उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री ब्रह्मा नन्द की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० श्रो. वि./एफ.डो./257-83/57171. —चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज गुरु नानक इण्डस्ट्रीज, सी.पी. 6-7 एम.एम.एस. रेलवे रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री अरन कुंमार शर्मा तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद धिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रौद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

वया श्री अरन कुमार शर्मा की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ० श्रो.वि./एफ.डी.-2/253-83/57178.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज रामस्वरूप-धनी राभ गोटा वाला, 6, इण्डस्ट्रीयल एरिया, एन आई.टी,फरीदाबाद, के श्रमिक श्री दीप चन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7क के श्रधीन श्रौद्योगिक स्र्ष्टि— करण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

बण श्री दीन चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भ्रो॰वि॰/एफ.डी./260-83/57185.—चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज भ्राटो इगनिश्चन प्रा.लि., प्लाट नं. 6, सैक्टर 24,फरीदाबाद, के श्रमिक श्री देवेन्द्र प्रसाद मालाकर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भ्रौद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीद्योगिक विवाद ग्राधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपेधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियामा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्राधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन श्रीद्योगिक श्रधिकरण हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री देवेन्द्र प्रसाद मालाकर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो०वि०/ एक. डी. /22/256-83/57192.--चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज ज्वाय बी० इण्डस्ट्रोज. प्लाट नं० 162, सैक्टर-24, फरीदावाद, के श्रीमक श्री पुरुषोतम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोष्टीगिक विधाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना वांछनीय सभझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7-क के श्रिधीन श्रीधोगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबन्धित मामले श्रीमिक तथा प्रयन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं;

क्या श्री पुरुषोतम की <sup>क्</sup>सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ब्रो. वि./एफ.डी./244-83/57199.—चूं कि राज्यपाल, हरियाणा, की राय है कि मैस है टाँमे के इण्डिया-1जी/.72, एत. आई.टी., फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री भनवान सहाय वर्षा तथा उसके प्रवन्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ब्रोडींगिक विवाद है;

भौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, ग्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7-क के भ्रष्ठीन स्रोद्योगिक म्रष्टिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद,को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या श्री भगवान सहाय वर्मा की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहतं का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./190-83/57206.--चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज जे० बी० इलैक्ट्रोनिक्स लि०, प्लाट नं० 163, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्रीमती रानी नोत्स तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घू) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रीधिनियन को धारा 7क के प्रयोग श्रीद्योगिक श्रीधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:--

क्या श्रीमती रानी नोहस की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं. भो.वि./एफ.डी./245-83/57213.--चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज भाटिया इलैक्ट्रीकल्ख प्रा० लि०, 7-ए, माविट नं० 1, ५ र्राहाद के श्रीमक श्री रामेश्वर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपबारा (1) के खण्ड (ध) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के अबोन श्रौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निदिष्ट करते हैं :—

क्या श्री रामेश्वर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./265-83/57220. → र्र्नाक राज्यनात, हरियाणा को राय है कि मैसर्ज हरियाणा रैडीयेटरज लिंग, प्रतिटं नं 107, सैक्टर-24, फरीदाबाद केश्रमिक श्री सूर्या नाथ राय तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसनें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायितर्गय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय संमझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विश्व अधिनियम, 1947 को धारा 10 को उत्त्वारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्याल इस हे द्वारा राज्य सरकार द्वारा उत्ता प्रिवेनियम को वारा 7 के अवीन ओ वोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिदिष्ट विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निदिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सूर्या नाथ राय की सेवाओं का समापन न्यायोंचित तथा ठीक है ? यदि नंहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?.

वी० एस० चौधरी, उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।